दीर्घ उत्तरीय

मीमांसा दर्शन का अपूर्व सिद्धांत

''अपूर्व'' का शाब्दिक अर्थ है, वह जो पहले नहीं था। मीमांसा मानती है कि इस लोक में किये गये कर्म एक अदृष्ट शक्ति उत्पन्न करते हैं जिसे ''अपूर्व'' कहा जाता है, मृत्यु कहा जाता है। मृत्यु के बाद आत्मा परलोक में जाती है जहाँ उसे अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है। ''अपूर्व'' के आधार पर आत्मा को सुख-दुःख भोगने पड़ते हैं।

मीमांसा-दर्शन का मानना है कि कारण में एक शक्ति निहित रहती है जो कार्य को अभिव्यक्त कराने में सहायक होता है। बीज एक कारण है और उससे निकला अंकुर एक कार्य है। बीज से अंकुर निकलने या अंकुर से पौधा विकसित होने में कारण के रूप में एक अदृश्य शक्ति कार्य करती है। यदि किसी कारणवश कारण की वह शक्ति समाप्त हो जाती है या बाधित हो जाती हैं तो कार्य की उत्पत्ति संभव ही नहीं हो सकती। आग में जलाने की शक्ति, भाषा में अर्थ की अभिव्यक्ति की शक्ति, रोशनी में प्रकाश करने की शक्ति, इसी प्रकार की है।

न्याय-दर्शन में इस अदृश्य शक्ति का खंडन किया गया है। नैयायिकों का कहना है कि मीमांसा का यह तर्क गलत है कि यदि कारण में शक्ति का अभाव हो तो कारण के रहने पर भी कार्य उत्पन्न नहीं हो सकता। नैयायिकों के अनुसार बाधा रहने पर कारण से कार्य की उत्पत्ति नहीं हो पाती। कारण अनौपाधिक होता है जैसा मिल महोदय ने भी माना है। अतः, यदि किसी कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति नहीं हो रही है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वहाँ शक्ति का अभाव है, बल्कि वहाँ किसी बाधा का होना है जो कार्य उत्पन्न नहीं होने दे रहा है। अतः, किसी कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति के लिए किसी अदृश्य शक्ति का रहना आवश्यक नहीं है।

मीमांसा-दर्शन में अदृश्य शक्ति का सिद्धांत एक मौलिक विचार है। किसी कर्म तथा कर्मफल के बीच अपूर्व एक आध्यात्मिक कड़ी है। जैमिनी के इसी शक्ति-सिद्धांत को अपूर्व की संज्ञा दी गई है। मीमांसा एकेश्वरवादी है, इसलिए सभी कार्यों के फलों को उसकी ही इच्छा पर नहीं छोड़ा जा सकता है। अनेक कार्यों के कारण के रूप में ईश्वर को मानना अनेक कार्यों के एक ही कारण को मानने के बराबर है और यह मीमांसकों को अग्राह्य है। यहाँ कर्मों को करने का आदेश उन कर्मों के फलों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इस प्रकार कर्म तथा कर्मफल के मध्य एक अनिवार्य संबंध रहता है। जैमिनी प्रत्येक कर्म के अंदर एक अदृश्य शक्ति का अनुमान करते हैं और इसी शक्ति को अपूर्व कहा गया है।

कुमारिल के अनुसार ''अपूर्व'' अदृष्ट शक्ति है जो आत्मा के अन्दर उदित होती है। कर्म की दृष्टि से ''अपूर्व'' कर्म सिद्धांत (Law of Karma) कहा जाता है। अपूर्व सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक कारण में शक्ति निहित है जिससे फल निकलता है। एक बीज में शक्ति अन्तर्भूत है जिसके कारण ही वृक्ष का उदय होता है। कुछ लोग यहाँ पर आपत्ति कर सकते हैं कि यदि बीज में वृक्ष उत्पन्न करने की शक्ति निहित है तो क्यों नहीं सर्वदा बीज से वृक्ष का आविर्भाव होता है। मीमांसा इसका कारण बाधाओं का उपस्थित होना बतलाती है जिसके कारण शक्ति का ह्रास हो जाता है। सूर्य में पृथ्वी को आलोकित करने की शक्ति है, परन्तु यदि मेघ के द्वारा सूर्य को ढक लिया जाय तो सूर्य पृथ्वी को आलोकित नहीं कर सकता है। अपूर्व सिद्धांत सार्वभौम नियम है जो मानता है कि बाधाओं के हट जाने से प्रत्येक वस्तु में निहित शक्ति कुछ-न-कुछ फल अवश्य देगी। ''अपूर्व'' को संचालित करने के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं है। यह स्वंयचालित है। 'अपूर्व की सत्ता का ज्ञान वेद से प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अर्थापत्ति भी अपूर्व का ज्ञान देता है। शंकर ने ''अपूर्व'' की आलोचना यह कहकर की है कि ''अपूर्व'' अचेतन होने के कारण किसी आध्यात्मिक सत्ता के अभाव में संचालित नहीं हो सकता। कर्म के फलों की व्याख्या अपूर्व से करना असंगत है।

परन्तु मीमांसा-दर्शन सिद्धांत के अनुसार अपूर्व कर्म का भोग करने की ऐसी शक्ति है जो निश्चित समय पर फलीभूत होती है। मीमांसकों का कहना है कि यदि कर्म की अदृश्य शक्ति के रूप में अपूर्व को स्वीकार नहीं किया जाए तो वर्त्तमान में किए गए कर्म (यज्ञ, हवन) परलोक में फलीभूत नहीं हो सकते, इसलिए कर्म का भोग करने की शक्ति (अपूर्व) को मानना आवश्यक हो जाता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com